

# डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 25, जेम्स 3:13-18

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर और आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 25, जेम्स 3:13-18 है।

जैसा कि हमने उल्लेख किया है, यकीनन इस खंड के केंद्र में, 3:1 से 4:12, 3:13 से 18 है, स्वर्गीय ज्ञान और नीचे से ज्ञान के बीच विरोधाभास की चर्चा।

और इसलिए, वास्तव में हमारे पास श्लोक 13 से 14 में श्लोक 15 से 18 में उन उपदेशों की पुष्टि के साथ विरोधाभासी उपदेश हैं। और वास्तव में, आप देखेंगे कि यह चियास्म के अनुसार संरचित है। तो, उपदेश में, वह एक सकारात्मक से शुरू करता है, जो आपके बीच बुद्धिमान और समझदार है, अपने अच्छे जीवन से उसे अपने काम, ज्ञान के काम, ज्ञान की नम्रता में अपने काम दिखाने दें।

लेकिन, इसके विपरीत, यदि आपके पास कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो अहंकारी मत बनो और घमंड मत करो, मत बनो, मत बनो, घमंड मत करो, और सच्चाई से झूठ बोलो। और फिर, जब पुष्टि की बात आती है, जैसा कि हम देखेंगे, वह नीचे से इस नकारात्मक ज्ञान का वर्णन करके पुष्टि शुरू करता है जिसमें कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा शामिल है। और फिर, अंततः, हम ऊपर से प्राप्त ज्ञान, इस एबीबीए का वर्णन करते हुए सकारात्मकता की ओर वापस लौटेंगे।

और फिर, वह ऊपर से ज्ञान पैदा करना चाहता है। और इसलिए, इसीलिए वह उसी से प्रारंभ और अंत करता है। यह एक बड़ी बात है।

और फिर विरोधाभास के माध्यम से, और बल्कि अधीनस्थ तरीके से, वह उस ज्ञान के बारे में बात करता है जो नीचे से है। लेकिन निस्संदेह, जीभ के उपयोग के अलावा, शिक्षण की एक और विशेषता ज्ञान है। जीभ शिक्षण का एक औपचारिक साधन है।

बुद्धि में शिक्षण की भौतिक सामग्री शामिल होती है। तो, फिर से, हालांकि उनके मन में अन्य मामले हैं, शिक्षण से कहीं अधिक सामान्य, शिक्षण की यह धारणा, जिसे उपदेश 3.1 में पेश किया गया था, अभी भी बनी हुई है और इस पूरे खंड में वह जो कहते हैं उस पर मंडराता रहता है। जाहिरा तौर पर, कुछ शिक्षक, और शायद चर्च के अन्य लोग भी, दावा कर रहे थे, या जेम्स ने कम से कम सोचा था कि वे बुद्धिमान और समझदार होने का दावा करने के इच्छुक हो सकते हैं।

तुममें से बुद्धिमान और समझदार कौन है? निःसंदेह, इसमें शेखी बघारना शामिल होगा, एक ऐसा घमंड जो ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा से जुड़ा था। वास्तव में, यह ईर्ष्या और स्वार्थी

महत्वाकांक्षा की अभिव्यक्ति है, जिसके परिणामस्वरूप अव्यवस्था, अराजकता और सभी प्रकार की बुराइयाँ उत्पन्न हुईं। अब, विडंबना यह है कि बुद्धिमान होने का दावा करने की प्रक्रिया में, उन्होंने दिखाया कि वे ज्ञान के वास्तविक चरित्र, जो कि नम्रता है, को नहीं समझते हैं।

तुममें से बुद्धिमान और समझदार कौन है? अपने भले जीवन के द्वारा, वह बुद्धि की नम्रता से अपने काम दिखाए। परन्तु यदि तुम्हारे मन में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो घमंड मत करो और सच्चाई से झूठ मत बोलो। निःसंदेह, बुद्धि का संबंध सत्य को जानने और उस पर अमल करने से है।

यह इस तथ्य को इंगित करता है कि ऐसा ज्ञान बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। इसका संबंध सत्य से नहीं बल्कि झूठ से है। अब, निस्संदेह, आपके पास कुछ मुख्य बिंदु हैं जो ऊपर से आने वाले ज्ञान और नीचे से आने वाले ज्ञान के संबंध में यहां बताए गए हैं।

पहली बात जो हम ध्यान दे सकते हैं वह यह है कि जो ज्ञान ऊपर से आता है वह सक्रिय है। इसमें कार्य शामिल हैं, जबकि नीचे से जो ज्ञान है वह केवल मौखिक है। जैसा कि मैं कहता हूं, यह पहला विरोधाभास है जो उसने यहां विकसित किया है।

ऊपर से आने वाली बुद्धि और नीचे से आने वाली बुद्धि, एक प्रकार की झूठी बुद्धि के विरुद्ध सच्ची बुद्धि है। सच तो यह है कि वह यहां इस संबंध में झूठ की भी बात करते हैं। लेकिन पहला अंतर यह है कि जो ज्ञान ऊपर से आता है वह सक्रिय होता है।

वह कहते हैं, इसमें काम शामिल है, जबकि जो नीचे से है वह महज भाषण है। जैसे कर्म बिना विश्वास मरा हुआ है, वैसे ही कर्म बिना बुद्धि मरा हुआ है। इसलिए, वह यहां श्लोक 13 में कहते हैं, अपने अच्छे जीवन से, वह अपने कार्यों को ज्ञान की नम्रता से दिखाएं।

यह एक स्पष्ट संकेत है और इसमें 2.18 से स्पष्ट संबंध शामिल है। परन्तु कोई कहेगा, तुम तो विश्वास रखते हो, और मैं काम करता हूं; अपने कामों के अलावा मुझे अपना विश्वास दिखाओ, और मैं अपने कामों से तुम्हें अपना विश्वास दिखाऊंगा। जिस प्रकार कार्यों के बिना विश्वास का दावा अप्रामाणिक विश्वास को इंगित करता है, उसी प्रकार कार्यों के बिना ज्ञान का दावा अप्रामाणिक ज्ञान को इंगित करता है। यह प्रामाणिक ज्ञान के किसी भी दावे को झूठा साबित करता है।

फिर, विरोधाभास केवल भाषण बनाम कार्रवाई के बीच है। और वैसे, यहाँ इस मात्र भाषण में वास्तव में खोखली डींगें हांकना शामिल है। घमंड मत करो और झूठ मत बोलो; सत्य के प्रति सच्चा।

अब, उससे परे, जो ज्ञान ऊपर से आता है उसकी विशेषता नम्रता है। यह नम्र, प्रौतेति है, बल्कि उस ज्ञान के विपरीत है जो नीचे से है, जिसकी विशेषता अहंकार, आत्म-केंद्रित शेखी बघारना है। वे कहते हैं, अपने अच्छे जीवन के द्वारा, वह अपने कार्यों को ज्ञान की नम्रता से प्रदर्शित करें।

परन्तु यदि तुम्हारे मन में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो घमंड मत करो और सच्चाई से झूठ मत बोलो। सच्चे ज्ञान में नम्रता, प्रौतेति में कार्य दिखाना शामिल है। अब, यहाँ नम्रता, निश्चित रूप से, प्रमुख शब्दों को स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है।

नम्रता का संबंध सबसे पहले स्वयं के प्रति दृष्टिकोण से है। बाइबिल परंपरा में नम्रता में स्वयं की सच्ची और सटीक धारणा शामिल है, खासकर सीमाओं के संबंध में। ईश्वर के संबंध में और अन्य व्यक्तियों के संबंध में सीमाएं।

इसमें वास्तव में, ईश्वर की श्रेष्ठता और सर्वोच्चता और ईश्वर की अद्वितीय पर्याप्तता को पहचानने के सामने अपने स्वयं के दावों को सामने रखने से इंकार करना शामिल है। अपने स्वयं के दावे करने, अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने या आगे बढ़ाने, अपना नाम बनाने, घमंड करने, या अपने लिए कुछ हासिल करने या प्राप्त करने से इनकार करना। प्राप्त करना, पकड़ना।

यह स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के विरुद्ध खड़ा है। यह वास्तव में, अध्याय 4, श्लोक 7 में इस पर चर्चा करने वाला है। इसलिए, अपने आप को भगवान को समर्पित करें, जैसा कि वह वहां कहता है। और फिर, पद 10 में, अपने आप को प्रभु के सामने नम्र करो, और वह तुम्हें ऊंचा करेगा।

बल्कि स्वयं की एक सच्ची और सटीक धारणा भी, न केवल अपने स्वयं के दावों को प्रस्तुत करने से इनकार करने के संदर्भ में, बल्कि; ईश्वर के संबंध में स्वयं की सच्ची और सटीक धारणा के संदर्भ में नम्रता का महत्व है। ईश्वर या ईश्वर के प्रति संबंध के संदर्भ में, यह ईश्वर के प्रति समर्पण और ईश्वर पर विश्वास में प्रकट होता है। फिर, जैसा कि हमने बताया, एक प्रकार की स्वतंत्रता या आत्मनिर्भरता के विरुद्ध।

अब, एक कारण है कि मैंने अभी कुछ समय पहले, अध्याय 4, छंद 7 से 10 तक इस संबंध का उल्लेख किया है, यह विश्वास है कि 3.13 से 18 तक ऊपर के ज्ञान के संबंध में वह यहां जो कहता है, वह आगे बढ़ता है और उसमें विशेषीकरण करता है। छंद, अध्याय 4 में, छंद, विशेष रूप से छंद 7 से 10 तक। ताकि यहां नम्रता, ज्ञान की नम्रता, ईश्वर के प्रति समर्पण, ईश्वर के प्रति विनम्र समर्पण और ईश्वर में विनम्र विश्वास, स्वतंत्रता की अस्वीकृति और के संदर्भ में व्यक्त की जाए। आत्मनिर्भरता. लेकिन साथ ही, दूसरों के प्रति, यानी स्वयं की सच्ची और सटीक धारणा, विशेष रूप से दूसरों के प्रति इसकी सीमाएं, ताकि यह शांतिपूर्ण और सौम्यता बनाम हिंसक, कठोर मुखरता की ओर ले जाए।

तो, वास्तव में, नीचे का ज्ञान विशिष्ट है, मुझे लगता है, 4.1 से 5 तक। युद्धों का क्या कारण है? तुम्हारे बीच लड़ाई का कारण क्या है? क्या यह आपकी भावनाएं नहीं हैं जो आपके सदस्यों में युद्ध लड़ रही हैं? तुम इच्छा करते हो और तुम्हारे पास नहीं है, इसलिए तुम हत्या करते हो। तुम लालच करते हो और प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए तुम लड़ते हो और युद्ध करते हो। फिर, नम्रता के इस व्यवसाय में स्वयं के प्रति पकड़ को अस्वीकार करना शामिल है।

तुम लालच करते हो और प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए तुम लड़ते हो और युद्ध करते हो। तुम्हारे पास नहीं है, क्योंकि तुम पूछते नहीं। आप मांगते हैं और आपको मिलता नहीं है क्योंकि आप इसे अपने शौक, इस तरह की चीजों पर खर्च करने के लिए गलत तरीके से मांगते हैं।

वास्तव में, नम्रता में दूसरों को स्वयं से अधिक गंभीरता से लेना शामिल है। अब, यहाँ फिर, वैसे, वह जीभ की धारणा लाता है, कहता है, वह नीचे से ज्ञान के बारे में बात करता है जैसा कि खाली शेखी के रूप में व्यक्त किया जा रहा है। इसलिए, इसमें न केवल केवल भाषण का मामला शामिल है, बल्कि अनुचित भाषण भी शामिल है।

यह जीभ के पापों में से एक है। अब, वास्तव में, शेखी बघारने का यह गौरव, जैसा कि वह आगे बढ़ेगा और यहां इसका वर्णन करेगा, और यहां हम अगली स्लाइड पर जा सकते हैं। आपके पास इन उपदेशों की पुष्टि है, ताकि वह सांसारिक ज्ञान के चरित्र के बारे में बात करें, और फिर, विरोधाभास के माध्यम से, यह 15 और 16 में है, और फिर श्लोक 17 से 18 में विरोधाभास के माध्यम से, स्वर्गीय ज्ञान के चरित्र के बारे में बात करें .

लेकिन वह 15 और 16 में सांसारिक ज्ञान के चरित्र के संबंध में कहते हैं, जो, निश्चित रूप से, यह पुष्टि करेगा कि यह ऊपर से नहीं है। यह दिव्य नहीं है; बल्कि, यह सांसारिक, अआध्यात्मिक और यहां तक कि राक्षसी भी है। तो, वह यहां कहते हैं, सबसे पहले, वह इस बारे में बात करते हैं कि यह ईर्ष्या की विशेषता है। पद 14, वास्तव में, आप इसे पद 14 में पहले से ही पाते हैं, लेकिन यदि आपके हृदय में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो घमंड न करें और सत्य के सामने झूठ न बोलें।

यह ज्ञान ऐसा नहीं है जो ऊपर से आता है, बल्कि सांसारिक, अआध्यात्मिक, शैतानी है। क्योंकि जहां ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा मौजूद होती है, वास्तव में, नीचे से इस गवाह के साथ आपकी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा की पुनरावृत्ति जुड़ी होती है। क्योंकि जहां ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा मौजूद है, वहां हर घिनौने काम में अव्यवस्था होगी।

अब, निस्संदेह, ईर्ष्या शब्द ज़ेलोस है। वास्तव में, हमारा शब्द ईर्ष्या या ईर्ष्या ग्रीक ज़ेलोस के अनुवाद की तुलना में एक लिप्यंतरण है, जो यहां ईर्ष्या के लिए शब्द है। ज़ेलोस का संबंध वास्तव में उत्साह से है, और ईर्ष्या में आत्म-केंद्रित उत्साह, स्वयं के लिए उत्साह, स्वयं के प्रति व्यस्तता और स्वयं के विशेषाधिकार शामिल हैं।

जब ईर्ष्या, उत्साह की बात आती है तो जो मुद्दे बांटते हैं, जो मुद्दे बांटते हैं वे व्यक्तित्व से जुड़े होते हैं। वास्तव में, उनके विभाजित होने का कारण यह है कि वे व्यक्तित्वों से जुड़े हुए हैं। इसलिए, इसमें आवश्यक रूप से प्रतिद्वंद्विता, स्वयं की चिंताओं और हितों के लिए उत्साह शामिल है।

अब, वह आगे बढ़ेंगे और इसे विकसित करेंगे, खासकर जब 4.1 से 4 में सामुदायिक संबंधों में अभिव्यक्ति की बात आती है। लेकिन इसमें, निश्चित रूप से, एक विडंबना शामिल है क्योंकि इस तरह की ईर्ष्या में स्वयं के हितों को बढ़ावा देने का उत्साह शामिल है। हर समय यह दावा करते रहते हैं कि यह एक उत्कृष्ट दिव्य ज्ञान है। इसके अलावा, इसमें स्वार्थी महत्वाकांक्षा, एरिथिया

शामिल है, जिसमें वास्तव में स्वयं के लिए अधिग्रहण शामिल है। यह स्वयं के लिए उत्साह से स्वयं के लिए अधिग्रहण की ओर बढ़ता है, जो प्रतिष्ठा या स्थिति और संपत्ति दोनों के मामले में आगे बढ़ने की इच्छा से प्रेरित होता है।

और फिर, वह इन दोनों में बदलाव लाएगा, विशेष रूप से संपत्ति, आप जानते हैं, जहां वह 4:1 से 4 में इस स्वार्थी महत्वाकांक्षा को लोभ से जोड़ता है। लेकिन ध्यान दें, वह कहता है, अगर आपके अंदर ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है दिल, यह एक आमूलचूल समस्या है. निःसंदेह, यह एक हृदय संबंधी समस्या है, क्योंकि वह हृदय के संदर्भ में बात करता है, निश्चित रूप से इसका संबंध इच्छाशक्ति, सोच और भावनाओं से है। यह एक आमूल-चूल, गहरी समस्या है जिसके आमूल-चूल समाधान की आवश्यकता है।

समस्या अंततः जीभ के साथ नहीं है। जैसा कि वह 3.1 से 12 में चर्चा कर रहा है, समस्या अंततः जीभ के साथ नहीं है। यह दिल के साथ है।

ऐसी स्थिति पश्चाताप की मांग करती है, अध्याय 4, श्लोक 7 से 10 तक। बुद्धि, फिर, आवश्यक इच्छा का विषय है। यह विशुद्ध रूप से तथ्य की बात नहीं है; कुछ मायनों में, यह मूलतः एक संज्ञानात्मक प्रकार का मामला भी नहीं है।

यह निश्चित रूप से विशेष रूप से एक संज्ञानात्मक प्रकार का मामला नहीं है, लेकिन इसका संबंध वास्तव में सोच, भावनाओं और इच्छाशक्ति से है, यह सब एक साथ जुड़ा हुआ है, जिसे बाइबिल मानवविज्ञान में हृदय के रूप में संदर्भित किया गया है। बुद्धि एक मामला है, विशेष रूप से जैसा कि यहां इस परिच्छेद में प्रस्तुत किया गया है, आवश्यक इच्छाशक्ति का मामला है। चरित्र में बदलाव, इच्छाशक्ति में बदलाव की मांग की जाती है।

और इसलिए, यहां आपको उपदेश दिया गया है: घमंड करना बंद करें, ईश्वर की बुद्धि से प्रेरित होने का दावा करना बंद करें। अब, वह ऊपर से आने वाले उचित ज्ञान, जो स्वर्गीय है, के विपरीत, नीचे से इस ज्ञान को सांसारिक के रूप में वर्णित करता है। वह कहते हैं, यह ज्ञान ऐसा नहीं है जो ऊपर से आता है, बल्कि सांसारिक है।

अब, बुद्धिमान होने का दावा करने में जो कुछ शामिल है, उसका एक हिस्सा, कम से कम उन मंडलियों में जहां जेम्स घूम रहा था, उत्कृष्ट दिव्य ज्ञान होने का दावा था। दूसरे शब्दों में, ईसाई समुदाय जिसमें जेम्स यात्रा करता है और काम करता है, वास्तव में ज्ञान को एक दिव्य वास्तविकता, एक पारलौकिक वास्तविकता के रूप में समझता है। और इस शेखी बघारने में वास्तव में उस ज्ञान का घमंड शामिल था जो एक दिव्य या पारलौकिक वास्तविकता थी, फिर भी उसमें दिव्यता का कोई संकेत नहीं था।

अतिक्रमण का कोई भी चिह्न नहीं। यह ऊपर से नीचे नहीं आता है, जैसा कि कम से कम परोक्ष रूप से दावा किया गया था, लेकिन यह सांसारिक है। जेम्स इंगित करता है कि यह किसी भी तरह से ईश्वर की ओर से नहीं आता है। इस प्रकार का ज्ञान किसी भी तरह से परमेश्वर से नहीं आता है।

यह सच्चे स्वर्गीय ज्ञान की एक प्रति मात्र है और एक घटिया प्रति है। वह जो ज्ञान के वास्तविक सार को पूरी तरह से गलत समझता है, ईश्वर से आने वाले ज्ञान की नकल करने का एक अजीब प्रयास है, और वह कहता है, इससे परे, आध्यात्मिक नहीं है। मानस, अआध्यात्मिक बनाम आध्यात्मिक।

अर्थात्, और यद्यपि यहाँ छोटे s का उपयोग किया गया है, और यह संभवतः सही है, प्रारंभिक ईसाई धर्म के संदर्भ में और नए नियम में, जब आपके पास इस प्रकार की भाषा है, मान लीजिए, अआध्यात्मिक है, तो यह वास्तव में इसके साथ चलती है यह विचार कि, इस मामले में, जैसा कि मैं कहता हूँ, शब्द पुसुकिके है, कि यह पवित्र आत्मा का नहीं है। इस ज्ञान के इतने विचित्र होने का कारण यह है कि यह मनुष्यों से उत्पन्न होता है, जिसमें मनुष्यों के पतन और व्यर्थता पर जोर दिया जाता है। फिर, 3:2, क्योंकि हम सब बहुत लड़खड़ाते हैं।

यह मानवीय शक्ति के आधार पर इस ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करता है। मैंने कुछ क्षण पहले ही पॉल रीस का उल्लेख किया था। पॉल रीस यहाँ इस अआध्यात्मिक शब्द के बारे में यही कहते हैं, उस ज्ञान का वर्णन करते हैं जो ऊपर से नहीं है, बल्कि नीचे से है।

वह कहते हैं कि वे इसे इस तरह से कहते हैं, आप अपरिवर्तित मनुष्य की मानसिक प्रक्रियाओं, वृत्ति के कमोबेश परिष्कृत आवेगों द्वारा शासित हो रहे हैं, न कि मसीह के मन और आत्मा द्वारा। आप चैत्य द्वारा शासित हो रहे हैं, प्सुकिको, यह वह शब्द है जिससे हमें अपना अंग्रेजी शब्द साइकिक मिलता है, आप अपरिवर्तित मनुष्य की मानसिक प्रक्रियाओं, वृत्ति के अधिक या कम परिष्कृत आवेगों द्वारा शासित हो रहे हैं, न कि मन द्वारा और मसीह की आत्मा। लेकिन फिर वह आगे बढ़ता है और कहता है, अंततः, और यहां कहता है, और यह, मुझे लगता है, इस सूची का चरम बिंदु है, सकारात्मक रूप से राक्षसी है।

यह वह शब्द है जिसका प्रयोग उन्होंने यहां श्लोक 15 में किया है। यह शैतानी है, श्लोक 16। वास्तव में, मुझे श्लोक 15 के बिल्कुल अंत में श्लोक 15 कहना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, जैसा उन्होंने कहा, जीभ के संबंध में, वैसे ही वे इस प्रकार के ज्ञान के संबंध में भी कहते हैं, यह पारलौकिक है। अंधकार की घातक व्यक्तिगत शक्ति इसमें काम कर रही है। अब, जेम्स जीवन की विनाशकारी शक्ति और स्वार्थ से प्रेरित जीभ को इंगित करने के लिए इससे अधिक कुछ नहीं कर सका।

इसका प्रभाव वह पद 16 में बताता है। क्योंकि जहां ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा मौजूद है, वहां अव्यवस्था होगी, और सामान्यीकरण, हर घृणित अभ्यास होगा। अव्यवस्था और हर घृणित प्रथा।

फिर, वह अब यहाँ संज्ञा का उपयोग करता है, अकातास्तासिया, अराजकता। यह मानता है कि ईश्वर व्यवस्था का ईश्वर और धार्मिकता का ईश्वर है। जिस किसी भी चीज़ के इस प्रकार के परिणाम हों, वह अवश्य ही राक्षसी होगी।

और फिर, जहां तक जेम्स का संबंध है, अच्छा है, और भगवान की अच्छाई की विशेषता सरलता, संपूर्णता, सुसंगतता है। ईश्वर की अच्छाई के विपरीत, बुराई का मूल चरित्र अव्यवस्था में है,

अराजकता में है। वहाँ सांप्रदायिक और व्यक्तिगत दोनों तरह की अव्यवस्था होगी, कोई शांति नहीं होगी, और हर घृणित प्रथा होगी।

अब, यह एक कारण है, तथ्य यह है कि वह इस तरह से नीचे से इस ज्ञान का वर्णन करता है, प्रत्येक घृणित अभ्यास, एक कारण है कि मुझे लगता है कि यहां 3:13 से 16 तक, मुझे कहना चाहिए, 3:13 से 18 तक, मुझे कहना चाहिए, सामान्य है और फिर विशिष्ट हो जाता है और विशिष्ट घृणित प्रथाओं का कारण भी है जिसका वर्णन वह 3:1 से 12 दोनों में करता है, और वह 4:1 से 6 में चर्चा करने के लिए आगे बढ़ेगा, और इसमें भी 4:11 और 12. लेकिन प्रामाणिक ज्ञान शामिल है, और वह निस्संदेह श्लोक 17 और 18 में वर्णन करने के लिए आगे बढ़ता है, ऊपर से ज्ञान पहले शुद्ध, बहुत दिलचस्प, पहले शुद्ध, फिर शांतिपूर्ण, सौम्य, खुला होता है कारण, दया से भरा हुआ, और अच्छे फलों से भरा हुआ, बिना किसी अनिश्चितता या कपट के, और फिर वह बात भी करता है, आगे बढ़ता है, जैसा कि उसने नीचे से ज्ञान के अपने विवरण के संबंध में किया था, अब भी समानांतर तरीके से जैसे वह करता है, वह करेगा ज्ञान के साथ करो, ऊपर से ज्ञान का उनका वर्णन, वह विशेषताओं के बारे में बात करने से प्रभाव की ओर बढ़ता है, दूर से, और हर नीचे अभ्यास में विकार के विपरीत, वह श्लोक 18 में कहते हैं, उस ज्ञान के संबंध में जो कि है ऊपर, और मेल कराने वालों के द्वारा धर्म की फसल मेल से बोई जाती है। ऊपर से प्राप्त इस ज्ञान का मुख्य लक्षण पवित्रता है।

वह इसे बहुत स्पष्ट करना चाहते हैं, और वह यह सुझाव देने से संतुष्ट नहीं हैं कि प्राथमिकता के क्रम में शुद्धता इसके केंद्र में है। वह वास्तव में स्पष्ट रूप से कहते हैं, पहले शुद्ध। बाकी सब इसी से उत्पन्न होते हैं और पवित्रता के लक्षण हैं। अब, जब वह शुद्ध होने की बात करता है, तो वास्तव में उसके मन में क्या है जब वह कहता है कि यह शुद्ध है? खैर, सबसे पहले, वह संदर्भ में यह सुझाव देता प्रतीत होता है कि उसके मन में मकसद की शुद्धता है।

मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि ऊपर से इस प्रकार के ज्ञान की पवित्रता ईश्वर के शुद्ध चरित्र को दर्शाती है, जैसा कि जेम्स ने पुस्तक में अन्यत्र ईश्वर को शुद्ध बताया है। ईश्वर को मकसद की शुद्धता के रूप में वर्णित किया गया है। उदाहरण के लिए, 1:5 में, उसे ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के देता है, और उसे दिया जाएगा।

और फिर 1:17 में, हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार ऊपर से है, रोशनी के पिता से आ रहा है, जिसके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं है। चूँकि ईश्वर स्वयं को पूरी तरह से हमें सौंप देता है, वह उस अर्थ में शुद्ध है। हम खुद को पूरी तरह से उसे और दूसरों को दे देते हैं।

ऊपर से आया यह ज्ञान उस अर्थ में हमारे लिए शुद्ध है। चूँकि पवित्रता में, ईश्वर के मामले में, ईश्वर को देना और यहाँ तक कि स्वयं को पूरी तरह से हमें देना शामिल है, हम देते हैं। हम खुद को पूरी तरह से उसे और दूसरों को दे देते हैं।

इसमें वास्तव में किसी भी अन्य इच्छा के साथ मिश्रित न होकर ईश्वर की इच्छा का पालन करने की इच्छा शामिल है। अब, वह कहते हैं, यह शांतिपूर्ण है। स्पष्ट रूप से, इसमें संदर्भ शामिल है क्योंकि हम आगे बढ़ेंगे और इसे विकसित करेंगे, विशेष रूप से श्लोक 18 में, जिसमें संदर्भ में ऐसी चीजें करना शामिल है जो शांति और मेल-मिलाप को बढ़ावा देते हैं।

अब, बाइबल में शांति शब्द बहुत दिलचस्प है। बेशक, पुराने नियम में, शब्द शालोम है। नया नियम, आइरीन।

लेकिन नए नियम में आइरीन का उपयोग पुराने नियम में शालोम के उपयोग से बहुत प्रभावित है, जिसका अनुवाद सेप्टुआजेंट में आइरीन किया गया था। वास्तव में, जैसा कि अक्सर बताया गया है, इसका संबंध पारस्परिक सौहार्द से कहीं अधिक है। इसका संबंध समग्र कल्याण से है।

लेकिन मेरे साथ ऐसा हुआ है, और वास्तव में इसके ये दोनों अर्थ हैं। इसका संबंध समग्र कल्याण से है, लेकिन अधिक विशेष रूप से, अक्सर, अधिक विशेष रूप से पारस्परिक सौहार्द से। मुझे लगता है कि यह बहुत संभव है कि शालोम की धारणा, जो शुरू में पारस्परिक सौहार्द से जुड़ी थी, और फिर समग्र कल्याण को संदर्भित करने लगी।

यदि वास्तव में ऐसा है, तो यह हिब्रू दिमाग में गहरी बैठी धारणा को दर्शाता है, और वह यह है कि भलाई या भलाई की कमी मुख्य रूप से संबंधपरक रूप से अनुभव की जाती है। कल्याण का सार, या कम से कम सामान्य रूप से कल्याण के केंद्र में, शांति है। अर्थात् पारस्परिक सौहार्द।

पारस्परिक कल्याण समग्र कल्याण के केंद्र में है। और, आप जानते हैं, वास्तव में, शांति की उस तरह की दोहरी भावना अक्सर नए नियम में इस शब्द की घटना में प्रकट होती है, और मुझे लगता है कि आपके पास यही है। संदर्भ में, उसके पास स्पष्ट रूप से है क्योंकि वह आगे बढ़ने जा रहा है और इसे अपने विपरीत के संदर्भ में विकसित करने जा रहा है, यानी, समुदाय के भीतर युद्ध और लड़ाई :.1 से 6 तक। तो, वह निश्चित रूप से यहां, या पर ध्यान में रखता है कम से कम संभावना है कि मन में शांति, या पारस्परिक सौहार्द के संदर्भ में शांति हो।

लेकिन यह मानने का कारण है कि उनके मन में समग्र कल्याण भी है, जिसमें हमारे भीतर की शांति भी शामिल है। ध्यान दें कि वह जेम्स की बाकी किताब में बुद्धि के रास्ते के विपरीत मूर्खता के रास्ते के बारे में बात करता है। जेम्स इसके बारे में विवादों के संदर्भ में बात करेंगे, एक विभाजित व्यक्ति, एक विभाजित व्यक्ति, एक दोहरे दिमाग वाला व्यक्ति।

निस्संदेह, वह ऐसा पहले ही 1.6 में, वास्तव में 1.7 में कर चुका है। क्योंकि उस मनुष्य को यह न सोचना चाहिए, कि दोचित्त मनुष्य, जो अपने सब चालचलन में अस्थिर है, प्रभु से कुछ भी प्राप्त करेगा। और वह इसे अध्याय 4 के पद 8 में उसी शब्द के माध्यम से फिर से लाएगा। हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो, और हे दोहरे मन वाले लोगों, अपने हृदयों को शुद्ध करो, ताकि शांति में हमारे भीतर भी एक प्रकार की शांति शामिल हो सके एक प्रकार के अस्तित्व, व्यक्तिगत अस्तित्व के विरुद्ध, जिसमें हमारे भीतर एक प्रकार का गृहयुद्ध शामिल है। अब, वह आगे बढ़ते हैं और कहते हैं कि इस प्रकार का ज्ञान भी सौम्य है, जो निश्चित रूप से, इस विचार को फिर से पुष्ट करता

है कि शांति में जो कुछ भी शामिल है उसका कम से कम एक हिस्सा व्यक्तियों के बीच या उनके बीच सौहार्द, सौम्य, एपिडक्स, जरूरतों के प्रति संवेदनशील है। भावनाएं, और दूसरों की भावनाएं, संवेदनशील, दूसरों की जरूरतों, भावनाओं और भावनाओं के प्रति सक्रिय रूप से संवेदनशील, गैर-जुझारू, क्रोध के खिलाफ, जुझारूपन, उकसावे के तहत हमला करने की एक प्रकार की प्रवृत्ति।

और वह इस ज्ञान की विशेषताओं को जारी रखता है जो कि ऊपर से है, इसे खुले दिमाग के रूप में संदर्भित करता है। वह इसका अनुवाद तर्क के लिए खुलेपन के रूप में करता है। इसका शाब्दिक अर्थ है अच्छा विश्वास करना या अच्छा विश्वास करना।

कहने का तात्पर्य यह है कि आसानी से मना लिया जाना या विश्वास कर लेना। अब, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है, व्यापक पुस्तक संदर्भ के आधार पर और नए नियम के आधार पर संपूर्ण धर्मग्रंथों की गवाही के आधार पर, कि जब वह बात करता है, तो अच्छी तरह से विश्वास करने या अच्छी तरह से विश्वास करने के संदर्भ में यूपीथ्स का उपयोग करता है, आसानी से राजी हो जाता है, भरोसा करते हुए, उसके मन में भोलापन या लापरवाह सहमति का भाव नहीं है। तथ्य की बात, वास्तव में, जेम्स का पूरा पत्र उन चीजों पर विश्वास करने और वास्तविकता को अपनाने के खिलाफ एक तर्क है, जिसका अर्थ है वास्तविकता का आकलन करने में बहुत सावधानी बरतना और केवल उन चीजों पर भरोसा करना जो हमारे विश्वास के लायक हैं।

इसलिए, भोलापन या लापरवाह सहमति के अर्थ में नहीं, जिनके लिए मुझे महत्वपूर्ण नहीं हैं। लेकिन वह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जो कही गई बातों को सुनता है। पुनः, पीछे जाकर, व्यापक पुस्तक संदर्भ के प्रकाश में इसकी व्याख्या करते हुए, 119 पर वापस जाकर, प्रत्येक व्यक्ति को शीघ्रता से सुनने दीजिए।

जो कहा गया है उसे सुनता है, दूसरे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य का मूल्य मानता है, जो व्यक्ति बोल रहा है, और जो उससे निष्पक्ष और उचित निष्कर्ष निकालता है। अब, जेम्स यहाँ सुझाव दे रहा है कि अतार्किकता और बंद मानसिकता, एक ऐसा रवैया जो कहता है, मैंने अपना मन बना लिया है। मुझे तथ्यों से भ्रमित मत करो. तर्कहीनता और बंद मानसिकता स्वार्थी महत्वाकांक्षा और ईर्ष्या, एक प्रकार की आत्मकेंद्रितता का परिणाम है।

मैंने अपना मन बना लिया है. मैं सुविधाजनक निष्कर्ष पर पहुंच गया हूं. मुझे तथ्यों से भ्रमित मत करो.

मैं सबसे अच्छा जानता हूं. मुझे यह सुनने की जरूरत नहीं है कि आपको क्या कहना है। और आप जो कहना चाहते हैं उसे निश्चित रूप से मुझे गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है।

अब, वह इसे दया और अच्छे फल से भरपूर भी बताते हैं। अब, निःसंदेह, जब जेम्स दया के बारे में बात करता है, तो यह स्पष्ट है, विशेषकर अध्याय दो के आधार पर, कि वह लोगों के बारे में अच्छी गर्मजोशी भरी भावनाओं के बारे में नहीं सोच रहा है। दया को मुख्य रूप से भावना के संदर्भ में नहीं बल्कि कार्य के संदर्भ में समझा जाता है।

दया के कार्य, जिस प्रकार की चीज़ों का उसने 2:14 से 16 में वर्णन किया है, दया और अच्छे फल से भरपूर, व्यावहारिक दया, गरीबों और पीड़ितों के लिए व्यावहारिक चिंता, जमाखोरी के खिलाफ और अनिश्चितता के बिना। कम से कम आरएसवी इसका अनुवाद इसी तरह करता है। बिना किसी अनिश्चितता के, यहाँ शब्द वास्तव में एडियाक्रिटोस है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तथ्य की बात है, उस शब्द का एक रूप 1.6 में इस्तेमाल किया गया था, लेकिन उसे बिना किसी संदेह के विश्वास के साथ पूछने दें। और वास्तव में, इस शब्द का दूसरा रूप 2:4 में प्रयोग किया गया था। क्या तुम ने आपस में भेद नहीं किया, और बुरे विचारों से न्यायी नहीं बन गए? आपस में भेद करो। इसलिए कि पहले पुस्तक में इस शब्द का एक रूप संदेह को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है और पक्षपात को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

इसीलिए कुछ लोगों का आग्रह है कि यहां इस शब्द का अनुवाद करने का बेहतर तरीका निष्पक्ष है, और कुछ अनुवाद इसे ऐसा ही प्रस्तुत करते हैं। सन्दर्भ की दृष्टि से, वह एक प्रकार की सच्ची आस्था, एक प्रकार की सच्ची आस्था का सुझाव देता हुआ प्रतीत हो सकता है, जो स्थिति, स्थिति, या धन या उसकी कमी की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के साथ एक जैसा व्यवहार करके खुद को अभिव्यक्त करती है। एक प्रकार का विश्वास जो सभी व्यक्तियों के साथ समान रूप से निष्पक्ष व्यवहार करके स्वयं को अभिव्यक्त करता है, विशेषकर गरीबों का तिरस्कार करने या उन्हें नीचा दिखाने से इनकार करने में।

और निष्कपट, कपट रहित, हां, अनिश्चितता या निष्ठाहीन, निष्कपट, पाखंड रहित, ईमानदार, दूसरों का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए दिखावा या चापलूसी नहीं करता। फिर से, आप समग्रता पर इस प्रमुख जैकोबियन, जेम्सियन जोर को अपनाते हैं ताकि आप जो हैं उससे अलग खुद को प्रस्तुत न करें। वह एक विभाजित व्यक्ति की अभिव्यक्ति होगी, संपूर्ण नहीं, सुसंगत नहीं।

लेकिन यहां, वह एक प्रकार की सुसंगतता का परिचय देता है जिस पर वह वास्तव में कहीं और जोर नहीं देता है, लेकिन यह उसके लिए स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है कि वह इसका उल्लेख यहां करता है, और वह यह है कि हम कौन हैं और हम जो स्वयं प्रस्तुत करते हैं, उसके बीच कोई विभाजन नहीं होना चाहिए सार्वजनिक रूप से दूसरों के लिए। न तो भगवान के प्रति और न ही दूसरों के प्रति कोई दिखावा है। और इसलिए, वह आगे कहता है, और धार्मिकता की फसल शांति से बोई जाती है।

यहाँ, निःसंदेह, प्रभाव है। धार्मिकता की फसल, वैसे, फलदायी के इस व्यवसाय पर उगती है जिसका उन्होंने पहले उल्लेख किया था, दया और अच्छे फलों से भरपूर, और शांति में भी बोया जाता है। और, निःसंदेह, यहां वह शांति की इस धारणा को अपनाता है, पहले शुद्ध है, फिर शांतिपूर्ण है।

जो शांति स्थापित करते हैं उनके द्वारा धार्मिकता की फसल शांति से बोई जाती है। शांति और सद्भाव, तब प्रभाव है, अव्यवस्था नहीं, आंतरिक रूप से या दूसरों के संबंध में समुदाय के भीतर, विनाश नहीं, बल्कि संपूर्णता। फिर, शांति की यह धारणा समग्र कल्याण है, विनाश नहीं, बल्कि संपूर्णता, स्वास्थ्य, इत्यादि।

श्लोक 18 में वास्तव में एक प्रकार का अंतर्निहित उपदेश है, और वह यह है कि ऊपर से दिए गए ज्ञान की विशेषताओं की इस सूची के ठीक बाद आता है, अब इसके प्रभावों के संदर्भ में इसके बारे में बात करते हुए, इस प्रकार के प्रभाव के बारे में ज्ञान, वह वास्तव में यह सुझाव दे रहे हैं कि ये सभी चीजें जिनके बारे में उन्होंने बात की है, जैसे कि नम्रता, तर्क के प्रति खुलापन, दयालुता, अच्छे फल की प्राप्ति, कोई अनिश्चितता नहीं, कोई जिद नहीं, ये सभी, यदि वे वास्तव में इसका हिस्सा हैं सच्चा ज्ञान, समुदाय में शांति को बढ़ावा देने के संदर्भ में किया जाना चाहिए। उन्हें इस तरह से किया जाना चाहिए जिससे शांति को बढ़ावा मिले। इनमें से कुछ कार्य, ऊपर से प्राप्त ज्ञान की कुछ विशेषताएँ ऐसे तरीके से की जा सकती हैं जिनका परिणाम बिल्कुल विपरीत प्रभाव होगा।

उदाहरण के लिए, नम्रता के संबंध में, यदि कोई सौम्यता और पूर्ण सज्जनता को अमूर्त कर देता है और अपनी अभिव्यक्ति, इसके प्रभाव के संदर्भ में ऊपर से इस ज्ञान की विशेषताओं में से एक के रूप में सज्जनता पर विचार नहीं करता है, जैसा कि यहां श्लोक 18 में वर्णित है, तो कोई सोच सकता है सज्जनता या व्यक्तियों को उनके पापों का सामना करने से इनकार करने के संदर्भ में सज्जनता व्यक्त कर सकता है। याद रखें, जेम्स ने अपनी पुस्तक को यह कहते हुए समाप्त किया है कि यदि आप में से कोई भी सत्य से भटक जाता है और कोई उसे वापस लाता है, जिसमें व्यवहार में आवश्यक रूप से कुछ टकराव शामिल होगा, तो उसे बताएं कि जो कोई भी पापी को उसके रास्ते से वापस लाएगा, वह उसकी आत्मा को बचाएगा। मृत्यु से और बहुत से पापों को ढांप दो। या आप खुले दिमाग को बिना किसी विवेक के हर उस चीज़ के प्रति खुले रहने के रूप में समझ सकते हैं जो सामने आती है।

लेकिन निःसंदेह, यह समुदाय के लिए विनाशकारी होगा। समुदाय की संपूर्णता और समुदाय में शांति सत्य और सही सिद्धांत के प्रति चिंता से प्राप्त होती है। लेकिन अगर किसी के पास खुले दिमाग का दृष्टिकोण है, ताकि किसी भी व्यक्ति को केवल इसलिए स्वीकार किया जा सके क्योंकि उसे माना जाता है, तो सही सिद्धांत सहित सत्य अब महत्वपूर्ण नहीं रह गया है, जो वास्तव में विभाजन और विनाश का परिचय देगा। समुदाय।

खैर, यह हमें अध्याय 4 के बिंदु पर लाता है, जहां, जैसा कि मैंने कहा, मुझे विश्वास है कि वह आगे बढ़ता है और सबसे पहले, 4:1 से 6 में, नीचे दिए गए ज्ञान का वर्णन करता है, जहां वह वर्णन करता है तुम्हारे और वहाँ के अन्य सभी लोगों के बीच युद्ध और लड़ाई। और फिर, निःसंदेह, छंद 7 से 10 में, वह मेरे निर्णय के अनुसार, उस ज्ञान को विशिष्ट करता है जो ऊपर से आता है। और फिर 4:11 से 12 में, वह अन्य तरीकों से उस ज्ञान को विशिष्ट करने के लिए वापस जाता है जो नीचे से है जिसका वह 3:13 से 18 में वर्णन कर रहा है।

किसी भी कीमत पर, यह रुकने लायक जगह है।

यह डॉ. डेविड बोवर और आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 25, जेम्स 3:13-18 है।